बी.ए. हिन्दी (प्र.) खण्ड - तृतीय पत्र - पाँचवाँ

डॉ० संतोष कुमार

जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषताएँ : (आगे...)

सज्जन, कल्याणी परिणय, प्रायश्चित, करुणालय, राज्यश्री और विशाख प्रसाद की प्रारंभिक नाट्य रचनाएँ हैं। ये नाट्य-शिल्प और वस्तु संवेदना की दृष्टि से उतनी श्रेष्ठ ~~रचना~~ कृतियाँ नहीं हैं जितनी की इसके बाद की नाट्यकृतियाँ। ~~अजातशत्रु~~ अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ और कामना लगभग एक ही काल की रचनाएँ हैं। इसके पश्चात चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त ~~और~~ और ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद की प्रौढ़ रचनाएँ प्रकाशित हुई।

'सज्जन' का कथानक महाभारत की एक घटना पर आधारित है जबकि कल्याणी 'परिणय' का संबंध नन्द की पुत्री कल्याणी और चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रेम प्रसंग से जुड़ी हुई है। 'करुणालय' प्रसाद का गीत नाट्य है। इनके द्वारा रचित 'प्रायश्चित' नाटक को हिन्दी का प्रथम दुखान्त नाटक माना जा सकता है। इसी नाटक से प्रसाद के नाटकों का शिल्प परिवर्तन प्रारंभ हुआ और उसमें भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्य शिल्प का समन्वय दिखाई पड़ने लगा।

'विशाख' से प्रसाद का नाटककार के रूप में नया अवतार माना जा सकता है। उनके ऐतिहासिक नाटकों का प्रारंभ इसी नाटक से माना जाता है। अपने नाटक की मुख्य विशेषता इतिहास के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की समस्याओं को वाणी देने का प्रयास है।

अपने युग में होने वाले धार्मिक एवं साम्प्रदायिक संघर्षों को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने ऐतिहासिक एवं पौराणिक ~~कथा~~ की घटनाओं एवं कथाओं को अपने नाटक के मूल में रखा। उन्होंने क्षेत्रीय विभेदों को समाप्त कर राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने पर विशेष बल दिया। 'चन्द्रगुप्त' एवं 'स्कन्दगुप्त' नाटक इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित कर उसे इतना शक्तिशाली बनाया जाए कि उसे विदेशी आक्रान्ताओं से बचाया जा सके।

उन्होंने ~~प्रतीक~~ 'कामना' की रचना की जो एक प्रतीक नाटक है। इसमें विभिन्न भावों को पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वही दूसरी तरफ उन्होंने 'एक घूंट' जैसी एकांकी की रचना भी की जिसमें स्त्री-पुरुष के प्रेम को विषय बनाया गया है। साथ ही इन्होंने 'ध्रुवस्वामिनी' जो इनकी अंतिम नाट्य कृति है। जिसमें नारी समस्याओं को विषय वस्तु बनाया गया है। नारी के पुनर्विवाह की समस्या को धर्म की पीठिका पर स्थित करके कुछ उलझे हुए प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास इन्होंने इस नाटक के माध्यम से किया है।

प्रसाद जी के नाटक अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करने वाले ऐसे नाटक हैं जिसमें कथानक भले ही इतिहास से लिया गया हो परन्तु उनमें वर्तमान समस्याओं को ही प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीयता की भावना, अतीत गौरव की अभिव्यक्ति, आदर्श नारी पात्रों की परिकल्पना, सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति, उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना प्रसाद की के नाटकों की मूल विशेषताएँ हैं। इसके साथ ही सांस्कृतिक बोध, उदात्त कल्पना, पात्रों का अंतर्द्वन्द्व, काव्यमयी भाषा, साहित्यिकता, राष्ट्रीयता एवं दार्शनिकता उनके नाटकों की विशेषताएँ हैं। प्रसाद के नाटक में पाश्चात्य एवं भारतीय नाट्य शिल्प का सुन्दर समन्वय हुआ है। उनके नाटक को सुखान्त या दुखान्त ने कहकर प्रसादान्त कहा जाता है क्योंकि उनके नायक को अंतिम फल मिलने के उपरान्त भी विषाद की हल्की छाया शेष रह जाती है।

प्रसाद हिन्दी के महान ऐतिहासिक नाटककार हैं। उनके नाटकों का शिल्प बेजोड़ है। गीतों ने उनके नाटकों को सरस बना दिया है। प्रसाद ने जब नाटक लिखे तब हिन्दी में रंगमंच अपनी प्रारंभिक अवस्था में था जिस कारण उनके नाटक रंगमंच के अनुकूल नहीं है क्योंकि उसमें पात्रों की संख्या अधिक है, भाषा कठिन है, संवाद लंबे-लंबे हैं, दृश्यों की संख्या अधिक है, दार्शनिक विचारों की प्रचुरता है, अतः जन साधारण के लिए ये नाटक उपयुक्त नहीं है। परन्तु उनके अंतिम नाटक ~~रंगमंच~~

'ध्रुवस्वामिनी' रंगमंच की दृष्टि से सभी प्रकार से एक सफल नाटक है। कुछ आलोचकों का कहना है कि प्रसाद की नाट्य रचनाएँ पाठ्य अधिक हैं, अभिनेय कम। प्रसाद के नाटकों में दार्शनिक विवेचनों की भरमार है, चरित्र चित्रण में वैशिष्ट्य है, भारती एवं पाश्चात्य नाट्य कला का समन्वय है और अतीत के पट पर वे वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करते हैं। 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त' एवं 'ध्रुवस्वामिनी' अकी प्रौढ़ कृतियाँ मानी जा सकती हैं।